Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 2 | ISSN : 2581- 6306

'उत्तरसीताचरितम्' में वर्णित नारी चेतना के अभिनव आयाम

डॉ. सन्दीप कुमार द्विवेदी
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
भारतीय महाविद्यालय फ़र्रुखाबाद

सारांश – संस्कृत साहित्य में रामायण एवं महाभारत के कथानक को उपजीव्य मानकर सर्वाधिक रचनाएं दृष्टिगोचर होती हैं। प्रस्तुत उत्तरसीताचरितम् महाकाव्य सनातन कवि रेवाप्रसाद द्विवेदी की प्रसिद्ध रचना है। कवि ने भवभूति विरचित उत्तररामचरित नाटक के कथानक को उपजीव्य मानकर स्व–कल्पनावैशिष्ट्य से अभिनव तत्त्वों का समावेश कर सहृदय पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। इसमें नारी चेतना के सन्दर्भ में पारम्परिक दृष्टि के साथ आधुनिक दृष्टि से वर्णन किया है। कवि ने आदर्श नारी, दाम्पत्य, मातृस्वरूप, राष्ट्रभक्ति, अबला से प्रबला आदि विषयों का सरस वर्णन किया है। कैकेयी जैसे उपेक्षित पात्र के चरित्र को भी उत्कृष्ट स्थान दिया है।

संकेत शब्द – महीसुता, दाम्पत्य, पातिव्रत्य, विश्वकल्याण, अस्मिता, राष्ट्रधर्म, मानवतावाद, प्रबला, स्वाभिमान, पर्यावरण, कर्मयोग, सौन्दर्य, परित्याग आदि।

काव्य रचना की दृष्टि से महाकाव्य कवि समुदाय में समादृत काव्य विधा है। आदि कवि वाल्मीकि से लेकर अद्यावधि पर्यन्त रचित महाकाव्य वर्ण्य विषय, भाव प्रवहणता, रस संयोजन, कथानक आदि की दृष्टि से पाठकों को आनन्दानुभूति कराते हैं। आधुनिक युग में कवि गण विभिन्न कथानकों को आधार बनाकर तथा सर्वथा नवीन कथानक का सृजन कर रचनाएं कर रहे हैं। बीसवीं शताब्दी में काव्य, नाटक, महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक–काव्य तथा अनेक देशान्तर एवं भाषान्तर काव्यविधाओं को कवियों ने अपनी लेखनी से उपकृत किया है।

आधुनिक संस्कृत महाकाव्य परम्परा में सनातन कवि आचार्य रेवाप्रसाद द्विवेदी द्वारा रचित उत्तरसीताचरितम् का महत्त्वपूर्ण स्थान है। सनातन कवि ने आधुनिक परिवेश में बदलते जीवन मूल्यों एवं मानदण्डों को प्रस्तुत किया है। स्त्री सशक्तीकरण सम्बन्धी विचारों में सर्वथा नवीन दृष्टिकोण परिलक्षित होता है। कवि ने सीता को महीसुता के रूप में वर्णित किया है; जो इस कथा में उसे सामान्य नारी का प्रतिनिधित्व करने से रोकती है तथा यही अलौकिकता उसके अन्दर सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। अलौकिकता के रक्षण के मध्य ही कवि समसामयिक समाज को भी अद्वितीय आदर्श उपस्थित करता है। सीता की कोमलता का वर्णन ही कवि को अभिप्रेत नहीं है अपितु कवि 'कोमल है पर कमजोर नही' की उक्ति को उद्घाटित करता है। माता कौशल्या उन्हें छुई–मुई कहती हैं।

भारतीय संस्कृति में त्याग पूर्वक भोग की भावना सन्निहित है। यहां के मानवों में जीवन के साथ चरम पुरूषार्थ मोक्ष की प्राप्ति भी अनिवार्य लक्ष्य है। अतः कवि ने महाकाव्य में जीवन एवं मुक्ति दोनों का सन्निवेश किया है–

मनुजवपुषि भुक्तिमुक्तिलक्ष्म्यौ विधृतविभक्तितयापि यत्र युक्ते।
भरतभुवनसंस्कृतौ स्वमर्थं 'प्रतिजनजीवनमुक्ति'–मर्पयेते।।[1]

पातिव्रत्य धर्म का निर्वहण करने की कुल परम्परा एवं नारी स्वाभिमान को अक्षुण्ण बनाने के कारण माता कौशल्या ने सीता जी से कहा कि तुम मेरे लिए वन्दनीय हो गई हो –

सुते! विधौ वामविधायिनि व्रतं सुताय मे स्निग्धमना न याऽत्यजः।
पतिव्रतानामभिरक्षितत्रपा त्वमेव वन्द्याऽसि ममैव साधुना।।[2]

अर्थात् तुम सम्पूर्ण मानव सृष्टि के लिए सादर वन्दनीय साक्षात् धर्मस्वरूपा तथा इक्ष्वाकु वंश की कीर्ति पताका हो। यही नहीं हे पुत्रि! तुम इस रामायण नामक देवालय की सबसे मनोरम एवं महत्त्व की देव प्रतिमा भी हो तथा राम से कहती हैं –

त्वया सगर्वं खलु राष्ट्रमस्ति नः।[3]

यहाँ परम्परा से जो सम्मान कवियों के द्वारा स्त्रियों के लिए दुर्लभप्राय है, उसे स्थापित करते हुए सनातन कवि ने अपनी प्रगतिशील एवं समाजोन्मुखी भावना को प्रकट किया है। कैकेयी के व्यक्तित्व को, जिसे रामायण से लेकर उपजीव्य काव्यों से होते हुए संस्कृतेतर काव्यों में अनुदार नारी के रूप में समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया गया है, को मैथिली शरण गुप्त के बाद एक ऊँचाई प्रदान की है। राम निशीथ काल में वनगमन से पूर्व कैकेयी से मिलने जाते हैं तथा वे माता कैकेयी को अन्य माताओं से पूज्य तथा क्षत्रिय स्वाभिमान की रक्षिका मानते हैं।

क्षतात् सतस्त्रायत इत्यतीव सद् यशो यतः क्षत्रपदाभिमानिनः।
अपारयन् धातुमिमे सुवं तु तां सुवो निजाया अपि मेनिरेऽर्चिताम्।।[4]

माता कैकेयी के प्रति किसी भी प्रकार का अवाच्य या विकार राम के मन में दृष्टिगोचर नहीं होता अपितु वे अपनी इस माता को अधिक पूजनीय मानते हैं क्यों कि अभिमान रखने वाले क्षत्रिय अपनी माँ के कारण ही यषस्वी होते रहे हैं। राम कहते हैं कि–

इमां त्रपातो नतपूर्वविग्रहामुवाच रामो जननि प्रभावतः।
तवैव यातः सुगतिं प्रजेश्वरः समं तलेनैव भुवो न संशयः।।[5]

सनातन कवि का यह उद्घोष ही कैकेयी को विभिन्न आपत्तियों का भाजन होने से बचा लेता है क्योंकि राम ने अपने पिता की सद्गति एवं बृहद् साम्रज्य के लिए माता कैकेयी को हेतु के रूप में माना है। रामायण के सम्पूर्ण घटना क्रम को अत्यन्त उदात्त रूपक के माध्यम से कवि ने प्रस्तुत किया है। राम कहते हैं कि हे माता –

विधातुमेतां जगतीमशल्यकां कृतं सशल्यं स्वमनो यतस्त्वया।
त्वमेव मातर्ननु दूरदर्शिनां धुरि स्थिता राजनये सुमेधसाम्।।[6]

---

1. उत्तरसीताचरितम् 6/13
2. उत्तरसीताचरितम् 1/16
3. उत्तरसीताचरितम् 1/20
4. उत्तरसीताचरितम् 1/32
5. उत्तरसीताचरितम् 1/33
6. उत्तरसीताचरितम् 1/34

यहां पर अत्यन्त मुखरता से कवि ने माता कैकेयी के स्वाभिमान की रक्षा की है। परन्तु सनातन कवि यह बताने से भी नहीं चूकते हैं कि दशरथ की मृत्यु के लिए राम वनगमन एवं राम वनगमन के प्रति कैकेयी उत्तरदायी है। कवि सनातन कैकेयी के प्रति कहते हैं कि माता आपने संसार को निष्कण्टक बनाने के लिए अपने हृदय को सशल्य बनाया। अतः राजनीति के दूरदर्शी सुमेधाओं में निश्चित ही आपका ही प्रथम स्थान है।

यदस्ति पौलस्त्य–विनाश नाटकं त्वमेव तत्र प्रणिधानवानृषि ।
त्वमेव तत्रासि च सूत्रधारिणी वयं तु मूका ननु तत्र पुत्तलाः ।। [7]

महाकाव्य के द्वितीय सर्ग में कवि ने मर्यादा पुरुषोत्तम से राष्ट्र के विषय में अत्यन्त स्पष्ट उद्घोषणा करवाई है; जो समसामयिक समाज को दिशा देती है। राजा एवं प्रजा के मध्य विश्वास सम्बन्ध होना नितान्त आवश्यक है। इसकी चर्चा के उपरान्त कवि सीता के परित्याग की बात करते हैं। सीता पर लगाए गए कुत्सित आरोपों को सुनकर राम विचलित तो होते हैं परन्तु उसी क्षण वे कहते हैं कि मैं ही इसका कारण हूं क्योंकि यह मेरी जनता इतनी पशुवत् एवं अशिक्षित व्यवहार करती है–

ममैव किन्त्यत्र परिच्युतात्मनस्तुटिर्यदेषा जनतास्त्यशिक्षिता ।
पितुः स दोषः शिशु रत्ति यद् विषं विषग्हि वाच्यो यदिवर्धतंरूजा ।।[8]

सनातन कवि ने सीता एवं राम के सम्बन्धों की रक्षा एवं विश्वास की शिखरता को अक्षुण्ण रखते हुए सीता के सीतात्व की रक्षा की है जो कि नितान्त अलौकिक एवं स्तुत्य है। राम सीता के प्रति जनापवाद के पश्चात् किए गये व्यवहार से बदल व्याकुल भी नहीं होते हैं। वे कहते हैं कि –

अहो विधातः कथमीदृशो ग्रहः सुरापगा–पावक–तुल्य–जीविताम्।
मदेकचित्तामघ–मारुतैरिमां लतामिवाक्षेपयसे मम प्रियाम्।[9]

माताओं ने जहां भी राम एवं सीता की कोमलता को उद्घाटित किया है वह समान ही है। सीता तृतीय सर्ग में अनेक ज्ञानयुक्त बातों को कहती हैं तदन्तर वन जाने को तैयार होती हैं, उन्हें न तो राम से, न ही प्रजा से, कोई शिकायत है वे विश्वमानव के कल्याण हेतु वन जाने को तैयार हैं। राष्ट्र की उन्नति कवि की दृष्टि में सर्वश्रेष्ठ है। आश्रम को कवि ने राष्ट्र की आपत्ति को दूर करने वाला कहा है। वे कहती हैं मैं जहाँ आप चाहें वहाँ रह सकती हूं। आपकी कीर्ति के साथ विश्वमानव को निष्कंटक रहना चाहिए –

अस्तु मे भवदभीप्सिता स्थितिर्हन्त कुत्रचिदपि क्षमातले।
विष्मस्तु तु विषल्यतां गतं काममद्य सह कीर्तिभिस्तव।।[10]

विभिन्न उहापोह के पश्चात् यदि राम ने सीता के परित्याग का निर्णय लिया। उसका स्पष्ट कारण कवि ने राष्ट्र–धर्म को माना है। उत्तररामचरित के रचनाकार भवभूति ने भी राष्ट्रधर्म पालन एवं लोककल्याण के लिए सीता परित्याग के निर्णय को राम के वचन के रूप में प्रस्तुत किया है।–

स्नेहं दयां च सौख्यं च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकानां मुञ्चतो नास्ति मे व्यथा।।[11]

सीता का परित्याग करने वाला राम पतिधर्मी राम नही है अपितु राष्ट्रधर्मी राम है। वह राजा राम है न कि सीता का करुणानिधान राम है। यहाँ पर कवि ने केवल शासन की आवश्यकता, प्रजा के कल्याण के लिए सीता के परित्याग को दर्शाया है, यद्यपि राम भी अत्यन्त भावुक हैं लेकिन राजा हैं भावना का स्थान कहां? कवि ने सीता

---
7. उत्तरसीताचरितम् 1/35
8. उत्तरसीताचरितम् 2/26
9. उत्तरसीताचरितम् 2/32
10.उत्तरसीताचरितम् 3/9
11.उत्तररामचरितम् 1/12

परित्याग के सम्बन्ध में परार्थ सम्पदा की बात की है परन्तु परार्थ का कोई उल्लेख नहीं किया है कि उन्हें कौन सा परार्थ अभिप्रेत है।

स वृक्षवृत्तिर्जनताकृते प्रियां लतामिव त्यक्तुमनास्ततोऽभवत्।
भवन्ति चेतांसि महात्मनां सदा परार्थसंपादनसौख्यभाञ्जि वै।।[12]

सीता के परित्याग के सन्दर्भ में उत्तरसीताचरितम् में अकाट्य तर्क प्रस्तुत किए गए हैं; यद्यपि यह घटना भारतीय काव्य एवं समाज की विलक्षण एवं प्रवहणशील घटना है; जिस पर अनेक मत प्राप्त होते हैं। सीताचरितम् में राम लक्ष्मण के तर्क का समाधान करते हुए कहते हैं– तुम राम के आकाशपुष्प तुल्य कथा पर विचार न करो ,केवल अपना कर्तव्य करो तुम इस परित्याग का भी कष्ट सह लो क्योंकि हम क्षत्रिय माता की कुक्षि से उत्पन्न हुए हैं हमें प्रजा की रक्षा अपनी बौद्धिक शक्ति से करना है यहां भावना का कोई स्थान नहीं है। वस्तुतः सामाजिक जीवन वाले व्यक्ति का व्यक्तिगत जीवन गौड़ हो जाता है।यहां ममत्व से कर्मयोग को श्रेष्ठ बताया है।

स्त्री को मातृशक्ति के रूप में ही आचार्य ने स्वीकार किया। मध्यम वर्ग की स्त्री या सामान्य स्त्री का चित्रण नहीं है। सीता जी स्वयं को उर्मिला से **संसार** की चेरी भी कहती हैं। परन्तु निमिवंशीय कन्याओं माण्डवी एवं श्रुतकीर्ति, इन की बात स्तुत्य है। वे धिक्कारते हुए कहती हैं– निरर्गल पशु समाज में भी निर्दयता उस सीमा तक नही है; जितनी सभ्य मनुष्य समाज में दृष्टिगोचर होती है। पक्षी भी अपनी भावी सन्तान की सुविधा को ध्यान में रखकर नीड़ का निर्माण करते हैं परन्तु विद्वानों के इस समाज में विद्वानों के द्वारा चन्द्रमा की किरणों के सदृश निष्कलंक पक्वगर्भा, परिणीता, अबला को त्यागा जा रहा है।

अबला प्रथमं ततो वधूः परिणीताथ निषेकपाकभृत्।
अपि चेन्दुमरीचिनिर्मला विबुधैर्हन्त तथापि साऽस्यते।।[13]

कवि ने स्त्रियों को शास्त्र ज्ञान अपेक्षित माना है। लेकिन कवि ने स्त्री को पुरुष से स्वतंत्र नहीं माना है। पुरुष या पति के विषय में कहा गया है कि यह सम्बन्ध की उदात्तता है, न कि शोषण का भाव। विश्व कल्याण के लिए अबला को प्रबला बनने की बात की है। सीता ने अत्यन्त मार्मिक एवं मध्यम वर्गीय स्त्रीयों का यथार्थ प्रस्तुत किया है। जिस गुण को वर्तमान स्त्री विमर्शकार पुरुषवादी मानसिकता, ब्राह्मणवाद या मनुवादी मानसिकता कहकर नकार देते हैं उसे सनातन कवि ने स्त्री के गुण के रूप में देखा एवं प्रस्तुत किया है, जो समाज में समरसता एवं औदार्य को जन्म देता है न कि दो ध्रुवों के संघर्ष को उत्पन्न करता है। सर्वजन के कल्याणार्थ सीता का मानवतावादी वचन स्तुत्य है।

रामायण के उत्तर काण्ड में भी 42वें सर्ग में सीता परित्याग की कथा प्रारम्भ होती है; जहाँ भद्र ने पुरजनों के विचार को राम के पूछने पर बतलाया है। वाल्मीकि एवं भवभूति दोनों ने सीता परित्याग का वचन राम से कहलवाया है।

अप्यहं जीवितं जह्यां युष्मान् वा पुरुषर्षभाः ।
अपवादभयाद् भीतः किं पुनर्जनकात्मजाम् ।।[14]

रामायण में बहाने से लक्ष्मण सीता को वन में छोड़ने जाते हैं। इसी का वर्णन गुप्त जी ने यशोधरा में किया। वे लिखते हैं –

जायें, सिद्धि पावें वे सुख से,
दुःखी न हों इस जन के दुःख से,
उपालम्भ दूं मैं किस मुख से?
आज अधिक वे भाते।
सखि वो मुझसे कहकर जाते ।[15]

---

12. उत्तरसीताचरितम् 2/37
13 उत्तरसीताचरितम् 3/9
14. रामायण उ0का0 45/14

राम सीता के प्रति कहे गये अवाच्य से दुखी होते हैं तथा सीता के परित्याग पर विचार करते हैं। राम समाज धर्म एवं वैयक्तिक अस्तित्व के बीच द्वन्द्व की स्थिति में प्रिया को छोड़ने का निर्णय लेते हैं तथा राष्ट्र धर्म को सर्वोपरि स्वीकार करते हैं। परन्तु यहाँ यह बात स्पष्ट नहीं हो पाती कि भला जनता का क्या हित है सीता के परित्याग में। सनातन कवि इस प्रकार से सीता के प्रति किये गये अवाच्य का कारण अशिक्षा को मानते हैं तथा उस अशिक्षा के कारण के रूप में स्वयं अपने को मानते हैं–

ममैव किन्त्यत्र परिच्युतात्मनस्तुटिर्यदेषा जनतास्त्यशिक्षिता ।
पितुः स दोषः शिशु रत्ति यद् विषं विषग्हि वाच्यो यदिवर्धतंरूजा ।।[16]

पुनः सप्तम सर्ग में महर्षि वाल्मीकि सीता से प्रश्न करते हैं कि राम ने तुम्हें क्यों त्याग दिया। तब कवि ने पुनः वाल्मीकि से जो कहलवाया है उसमें तत्कालीन समाज प्रतिबिम्बित हो गया है। शिक्षा के प्रति कवि का युगानुकूल परिवर्तन स्तुत्य है।

भगवति! परमेकभत्र तत्वं, तव परिदेवनमूलभुन्नयामि ।
रघुपति जनता न शिक्षितास्ति, भवति च तन्त्रमितः सतां विरक्तिः ।।[17]

कवि ने उस विधा को धिक्कारा है; जो नारी का सम्मान एवं संरक्षण नहीं करती। भले ही सीता परित्याग का प्रस्ताव अशिक्षित जनता से आया हो राम परित्याग का निर्णय लेने में असमर्थ हो रहे हो तब कवि ने स्त्री अस्मिता, स्वाभिमान एवं कर्त्तव्य निष्ठा की नवीन उद्भावना प्रस्तुत की है। कवि ने उस यथार्थ को नहीं दबाया है। जो समाज में युगोन्युगों से व्याप्त रहा है–

आर्य! यद्यपि मनस्विनीजनः स्त्रीति विश्ववचनीयतास्पदम्
लोकनायककविवेकदीपकस्तत्कृते न परिहीयते परम् ।।[18]

कवि सनातन ने दाम्पत्य के स्वरूप को वर्णित करते हुए जो स्वरूप प्रस्तुत किया है, उसमें नारी न तो शोषित है, न शोषक है, न ही अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती है। वस्तुतः नारी का यही स्वरूप आदर्श समाज का निर्माण कर सकता है–

वस्तुतो यदि सुमानुषी सृतिः पद्मिनी, श्रयति पद्मतां प्रिया ।
साऽस्ति चेद् यदि शिखा विभावसोरूष्मतां स्पृशति तत्र च प्रिया ।।[19]

आचार्य द्विवेदी ने नारी को 'सैव संस्कृत वसन्त कोकिला' कहा तथा स्त्री के मातृस्वरूप का प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि भगवान् भास्कर की किरणों में संवित्स्वरूपा मातृशक्ति ही प्रतिबिम्बित है–

ज्योतिरिङ्गण मयूखतो हि या भास्करावधि विभाव्यते प्रभा ।
संविदक्षिणि ततोऽप्यसौ परा मातृशक्तिरनुबिम्ब्यते परम् ।।[20]

---

[15]. Hindi-kavita.com/यशोधरा 05
16. उत्तरसीताचरितम् 2/26
17. उत्तरसीताचरितम् 7/35
18 उत्तरसीताचरितम् 3/14
19. उत्तरसीताचरितम् 3/62
20. उत्तरसीताचरितम् 3/65

सीता उक्त महाकाव्य में उस नारी के रूप में चित्रित है; जो अपने देश एवं समाज के प्रति उत्तरदायी अर्थात् महत्त्वपूर्ण राष्ट्र के कार्यों में उसकी सहभागिता एवं निर्णय दोनों है। मध्यम वर्गीय नारी के स्वरूप में भी सीता को वर्णित किया है तथा विरोध के स्वर को भी दिखलाया गया है। सीता उर्मिला से कहती हैं–

अहमस्मि न साम्प्रतं स्वसो रविवंशस्य वधूः परात्परा ।
अधुनास्मि वराटचेटिका भुवनस्यास्य पुनर्वनेचरी ।।[21]

वे मानव को छुट्टा पशु से भी निकृष्ट कहती हैं–

समजेषु निरर्गलेष्वपि श्रयते निर्घृणता न तां प्रथाम् ।
श्रयते मनुजेषु यां, खगाः किमु नो नीडकृतः प्रजाकृते ।।[22]

उर्मिला श्रुतकीर्ति, माण्डवी प्रश्न करती हैं कि 'अपि मुद्रयितुं जनाननं स्वसती–त्यागविधिः किमौचिती । यहाँ पर लोकमत को भी धिक्कारा गया है तथा कहा गया है कि धर्म क्या मात्र कान पकड़ने के लिए है। सामाजिक ढाँचा पर करारा प्रहार करते हुए कवि लिखते हैं– समाज की कटु रीतियों से भयभीत दरिद्र व्यक्ति आखिर क्या करे। समाज के द्वारा विश्वास की भूमिका का समुचित आदर नहीं किया जाता है। कवि ने विश्वास एवं भावना के संयोग को समाज के आवश्यक तत्त्व के रूप में माना है–

यदि विश्वसनस्य भूमिकामुपरिष्टाच्च मनुष्यभावनाम् – ।
अधिकृत्य न संप्रवर्त्यते न समाजः स, महद्धि तच्छलम् ।।[23]

नारी के उदात्त स्वरूप का वर्णन कवि ने किया है। वे निमि वंशीय कन्याओं से कहलवाते हैं कि –

पुरुषः पुरुषार्थचत्वरे पदवीं ज्ञातुमितोऽभिलष्यति ।
महिला समयं परीक्ष्य तां दिशतीत्येवमुभौ महाव्रतौ ।।[24]

छठें सर्ग में कवि ने मध्यम वर्गीय नारी के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। सीता वाल्मीकि के आश्रम में हैं तथा सोचती है कि–

अकृत मनसि–'हन्त हन्त नारी जगति समर्पितचेतना परार्थे ।
न खलु न खलु विद्यतेऽत्र तस्या अणुपरिमाणमपि 'स्व'–संज्ञितत्वम् ।।[25]

यद्यपि भारतीय समाज पुरुष प्रधान समाज रहा है तथापि किसी के महान होने के प्रति उसकी माता को महत्वपूर्ण माना है। स्त्रियों के मातृरूप की प्रशंसा करते हुए जन्म की पवित्रता को कवि ने महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इनके अनुसार जिसका जन्म शुद्ध होता है वह महान होता है जैसे प्रकाश के लिए आकरोद्भवमणि किसी बाह्य उपाधि की अपेक्षा नही करती। सभ्य और सुशिक्षिता माता की शिक्षा के अतिरिक्त बालक को किसी अन्य से शिक्षा ग्रहण करने की आवश्यकता नहीं है। सप्तम सर्ग में कवि सनातन वाल्मीकि से कहलवाते हैं कि जिस प्रकार रत्नप्रसू भूमि से उत्पन्न मणि बहुमूल्य होता है उसी प्रकार सती एवं पतिव्रता माताओं की कुक्षि से उत्पन्न मनुष्य जन्मते ही महान होता है।

दुहित इह पुमान् स जातमात्रो भवति महान् स्वत एव, यः सतीनाम् ।
प्रभवति शिवकुक्षितो महार्हो मणिरिह रत्नसुवो भुवः प्रसूतः ।।[26]

---

21. उत्तरसीताचरितम् 4/30
22. उत्तरसीताचरितम् 4/38
23. उत्तरसीताचरितम् 4/48
24. उत्तरसीताचरितम् 4/53
25. उत्तरसीताचरितम् 6/4
26. उत्तरसीताचरितम् 7/7

मातृत्व की भूरि–भूरि प्रशंसा आचार्य सनातन ने की है तथा नारी को विश्वशान्ति में समर्थ एवं ज्ञान, भक्ति एवं कर्म योग की त्रिवेणी माना है–

सा विश्वविध्वंसविरामभूमिः सा विश्वशान्त्यै पटु सामरस्यम् ।
ज्ञानक्रियाभक्तिमयी च काचिद् योगत्रिवेणीप्रतिमापि सैव ।।[27]

कवि ने संस्कृत महाकाव्य के लक्षण को ध्यान में रखते हुए पंचम सर्ग में वनप्रान्त के सौन्दर्य का वर्णन किया है। कवि अपना मत प्रस्तुत करते हुए कहते हैं– जिस प्रकार सीता ने वाल्मीकि आश्रम को सुन्दर एवं सभ्यता का पोषक बना दिया था क्या आज की महिलाएं अपने गांव व नगर को आदर्श रूप में प्रतिष्ठापित नहीं कर सकतीं? वर्तमान नारियों की इस हेतु रूचि कवि को अभिप्रेत है।

विपिनभुवि पुरत्वमत्र जज्ञे यदि किल केवलयैव रामपत्न्या।
किमिव पुरपुरन्ध्रयो न कुर्युर्जनपदसीम्नि, रुचिं यदि श्रयेयुः।।[28]

कवि पर्यावरण के प्रति सतर्क है; जो किसी भी राष्ट्र की उन्नति एवं विकास के लिए आवश्यक है इसीलिए हनुमान जी ने लंका का दहन करके वहाँ का पर्यावरण नष्ट किया और श्रीराम ने कुबेर का। यहां पर कवि ने पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए राष्ट्रवादियों को प्रेरित किया है। पर्यावरण संरक्षण की भावना सच्ची देशभक्ति है।–

स्वयमपि कलशोर्द्भमेष लध्वीरियमसृजत सलिलेन संभृतान्ताः ।
कथमिव ननु सान्यथा लभेत प्रतिकणमुच्चतमां स्वदेशभक्तिम् ।।[29]

कवि ने अन्तःकरण के रावण को मारने की बात की है जो शोषण, अनाचार, अत्याचार आदि का जन्मदाता है–

सा राममाता च पुनः प्रतिष्ठामवेक्ष्य लोके तपसः सतीनाम् ।
‘ हृदि स्थितस्यापि दशाननस्य जादाद्य लोके मृतिरि’–त्यमंस्त ।।[30]

वाल्मीकि ने सीता परित्याग के कारण के रूप में भृगु जी के शाप को माना है। वहीं आचार्य सनातन इस विषय पर मौन हैं। महर्षि वाल्मीकि ने राम के द्वारा सीता के देखभाल का वर्णन किया है; जिसमें लव–कुश के जन्म के दिन शत्रुघ्न वाल्मीकि जी के आश्रम में होते हैं, पर कवि सनातन मौन हैं। जहाँ आदिकवि ने सीता को वाल्मीकि के साथ अश्वमेघ यज्ञ में ले जाने की बात करते हैं। वहीं कवि नारी अस्मिता को ध्यान में रखते हुए कथा में युगानुकूल परिवर्तन करता है। यहाँ खोजते हुए लोग वाल्मीकि के आश्रम में जाते हैं।

अन्त में जब सीता के समक्ष समस्त जनपदवासी उपस्थित रहते हैं तथा उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा करते हैं; जिसका कोई प्रभाव सीता पर नहीं पड़ता है उनकी मति विकार रहित हो जाती है। वे पद्मासन लगाकर बिना कोई तर्क–वितर्क के प्राणों का उत्सर्ग कर देती हैं। तब कवि का मन वह कह देता है जो न तो पूर्व के किसी कवि ने सीता से कहलवाया है और न ही इस ग्रन्थ में सीता ने अन्यत्र कहीं इस बात को कहा है–

इत्थं सैषा जनकतनया स्वात्मदेवस्वरूपं
ज्योतिष्कायं कमपि मुदिता राममासाद्य जाता ।
क्व भीरस्मिन् विरहजनिता, का च लोकप्रसूता
सत्त्वासत्त्वप्रथितिरबला, का च कालव्यपेक्षा ।।[31]

27. उत्तरसीताचरितम् 10/46
28. उत्तरसीताचरितम् 6/31
29. उत्तरसीताचरितम् 6/33
30. उत्तरसीताचरितम् 9/59
31. उत्तरसीताचरितम् 10/70

इस प्रकार ध्यान मग्न हो वह किसी लोकोत्तर राम को प्राप्त करके प्रसन्न हो गयी। उस परम पद की प्राप्ति के उपरान्त इस राम के साथ कैसा विरह का भय, कैसा सतीत्व–असतीत्व सम्बन्धी लौकिक जनापवाद और कैसी अवसर की प्रतीक्षा इन सभी से वह निरपेक्ष हो गयी थीं। पवित्रता के सन्दर्भ में सनातन कवि ने सीता या किसी अन्य से न तो कुछ कहलवाया है, न ही अपनी प्रशंसा का कोई फर्क है सीता पर। जब कि महर्षि वाल्मीकि रामायण में अपनी तपस्या एवं उपासना की शपथ ग्रहण कर सीता की पवित्रता का कथन करते हैं –

इमौ तु जानकी पुत्रावुभौ च यमजातको ।
सुतौ तवैव दुर्धर्षौ सत्यमेतत् ब्रवीमि ते ।।
प्रचेतसोऽहं दशमः पुत्रो राघवनन्दनः ।
न स्मराम्यनृतं वाक्यमिमौ तु तव पुत्रकौ ।।
बहुवर्षसहस्राणि तपश्चर्या मया कृता।
नोपाश्नीयं फलं तस्या दुष्टेयं यदि मैथिली ।
मनसा कर्मणा वाचा भूतपूर्वं न किल्बिषम् ।
तस्याहं फलमश्नामि अपापा मैथिली यदि ।।[32]

वहाँ सीता सपथ ग्रहण करती है, परन्तु अपनी अस्मिता की दृष्टि से वह निर्विकार रूप में है। यद्यपि दोनों कवियों ने पृथिवी के फटने का कारण सीता की पवित्रता मानी है। किन्तु सनातन कवि की सीता को बारम्बार अपनी पवित्रता को प्रमाणित करना पसन्द नहीं है, परन्तु वह अपने कर्त्तव्य पर दृढ़ है। सनातन कवि ने शपथ ग्रहण न कराकर युगानुकूल नारी के स्वाभिमान को उदात्त स्वरूप में प्रस्तुत किया है। वह विश्व कल्याणार्थ वन जाती है तथा राष्ट्र को भावी योग्य नायक देकर अपनी आत्यन्तिक निवृत्ति कर लेती है, वह राष्ट्र समाज एवं भविष्य को ध्यान में रखकर ऐसा करती है।

आचार्य सनातन सर्वाधिक असह्य हैं महाकवि भवभूति से, जो सीता को राम के साथ वापस अयोध्या भेज देते हैं यह नारी अस्मिता एवं उसके आत्मा की हार ही तो है। कवि ने सीता के उदात्त चरित्र का वर्णन किया है; जो अनेक कष्टों को सहन कर धर्म पालन पर अडिग रहती है तथा हर परिस्थिति में निर्भय रहकर भारतीय नारियों के लिए आदर्श उपस्थित करती है। यह चिन्तन ही कवि एवं ग्रन्थ दोनों को आदर्श स्वरूप में स्थापित करता है। कविवर द्विवेदी ने महाकाव्य में अनेक आधुनिक विषयों का भी समावेश हो किया है परन्तु उनकी कविता, शैली की दृष्टि से काशी की प्रौढ़ परम्परा की प्रतिनिधित्व करती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

1. रामायण, महर्षि वाल्मीकि, द्वितीय खण्ड, गीताप्रेस गोरखपुर, 21वां संस्करण सं0 2069।
2. उत्तररामचरितम् भवभूति, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, प्रकाशन वर्ष 2012।
3. उत्तरसीताचरितम्, सनातनकवि द्विवेदी रेवाप्रसाद, कालिदास संस्थान, महामनापुरी, वाराणसी, षष्ठ संस्करण।
4. जानकीजीवनम्, कविवर मिश्र अभिराजराजेन्द्र, वैजयन्तप्रकाशन, 8 बाघम्बरी मार्ग, प्रयागराज।
5. Hindi-Kavita.com

32. रामायण 96/18–21